CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रमणसुंदर:॥ ६४॥ द्वादशारण्यसंभाग।

शेषनागफणालय:॥ काम:श्याम:सुख:

४५० श्रीद:श्रीपति:श्रीनिधि:कृति:॥

६३॥ हरिहरोनारायणोनरोत्तमइष्टमि

काकुकाकु

काकुकाकु

काकुकाकु

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१९०१० यात्ना रामका हत्ना सू ३१

३० चन्द्रनिर्मल आयक २१ चन्द्रनिष्ठ

ल.	चं.	[illegible]	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.
१	३	८	७	२	२	८	९	८
२८	२२	२८	१६	२३	५	१	२१	२५
३५	५	३१	०	३१	०	०	०	०
३०	३०	०	०	०	०	०	०	०

ल.	चं.	ऊ.	रा.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
१	३	५	२	८	७	३	९	५
२६	२६	२५	३	११	८	७	११	८
२८	५१	१५	५०	३२	५७	०	२	८२
४१	४४	०	०	०	०		०	०

अथ

पृथ्वी

सं ३२

SCANNED

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

घटि ६० सेचडावे पलवि ६० सेचडावे अंश तत्र ३० सेचडावे राशवाराखेचडा० सासिक्रमसवसरपं० सिंहाकृत्यायकोपा धड धड धड धावमानानश्वान दैत्यानां दिव्यशस्त्रै स्तड २ स्तोडयंति शिरांसि तेसां रक्तां पवंति घुट २ प्रेषयंति पिशाचं त्रतां २ हसंति खद ३ शांभ विमांप्रुतातु ० इति ध्यानम्॥ तत्र रांभ शुभं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज्योतिप्रबोधमितिभाषाः केशववाक्· श्रुतिश्च· ज्योति·
रित्यन्वय· केशवस्यवाक्· केशववाक्· केशवसोंवत्स
रनामहै तिस्को· जेमाजोज्योतिमिहै तिस्कोजोवाक्
वाणिहै माश्रुतिश्च· श्रुतिजोवेदहै· सामि· सर्वोपरिवि
राजमानहै· कथंभूता· केशववाक् केशवकी वाणीके
सिहै· तत्सूक्तकर्मचरणा· चित्तपरिशोध्य· ज्योतिप्र
बोधजनानि· तस्यसूक्तानि· तत्सूक्तानि· तत्सूक्ता
3॥ नांकर्म· तत्सूक्तकर्मचरणा· तत्सूक्तकर्मचरणा·
ते· तत्सूक्तकर्मचरणा ततः कहियेतिसकेशवके· सू
क्तकहिये भलकहियेहुयेजाकेशवि: आरताजका

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१ दि ग्रंथहै·तिनाकाजोकर्मगरागतादि·क्रियाहै·तिस्के
जोचरणपादहै·तिनाकर्मकेचित्तंहृदयकों·परिशोध्य·
ॐ त्यत्तशोधिके ज्योतिष्प्रवोधजननि·ज्योतिष्प्रवो
ध·ज्योतिष्प्रवोध·ज्योतिस·वोध ज्योतिस्प्रवोध·
मूल·ज्योतिःप्रवोधजननिपरिशोध्यचित्तं तत्स्कृत
कर्मचरणगहनार्थपूर्णा॥स्वल्पाद्दरापिवत्त
वशक्तैरुपायैर्व्यक्तिकृताजयकेशववाक्कृतिश्च॥१॥
जनयतीतिजननिज्योतिसप्रवोधजननिज्योतिशा
स्त्रकाप्रवोधजोहैज्ञान·तिसकिजननिकहियेमा
ताहै·पुन·कथंभूता केशववाकृ·फेरकोसिहैकेशा रामः
१

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वकि वाणी· गहनार्थपूर्णा· गहन पद अर्थ· गहनार्थ· ग
हनार्थन पूर्णा· गहनार्थपूर्णा· गहन कहिये· वनके समा
न· दुर्गम· असाजा· अर्थप्रयोजन है· तिसकर्के पूर्णा क
हिये भरि है· पुनः कथंभूता· केशववाक्· फेरके सि है के
शव कि वाणि· स्वल्पाक्षरा· अपिच· स्वल्पान्यक्षराणि
यस्यांसा· स्वल्पाक्षरा· स्वल्प कहिये थोडे है· अक्षर जीस
विषे· असे भि है· पुन कथंभूता· केशववाक्· फेरकेसि
है केशव कि वाणि· तद्दशाकृते उपाये· व्यक्तिकृता· तषां·
अंशा स्तदंशा· तदंशे कृता· तदंशकृता· सा तदंशकृ
ते· तिनो यथा के जो है· अंशभाग· तिनोंने· कृतं कहिये·
किये असे जो है उपाय· तिनांकर्के व्यक्तिकृता· व्यक्ति

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

क्तकहिये·प्रगट·किईगईहै· कथंभूता श्रुति·कैसि
है वेद· तत्स्तुक्तकर्मचरणे· चित्तंपरिशोध्य ज्योतिसर्वो
धजनति·तेनस्तुक्तानिचतानिकर्माणि·तत्स्तुक्तकर्म
चरणानि·त·तत्स्तुक्तकर्मचरणे·ततः तिसवेदनेस्तु
क्तकहियेभलप्रकारकरिकै कहियेहुयेजोकर्महैतिनो
केचरणजोआचरणहै·तिनोकरिकै·चित्तकोशोध्यकरिकै·
ज्योति·जोहै·प्रकासस्वरूप·परब्रह्मतिस्कासर्वाधजो
हैस्तान् तिस्किजननिकहियेजणावणेवालिहै·पु
न·कथंभूता श्रुति·फेरकैसिहैश्रुति·गहनार्थपूर्णा·
गहनार्थजोगंभिरअर्थहै·तिस्कोके·पूर्णहै·पुनःकथं
भूता श्रुति·फ· श्रुतिस्वल्पाक्षरा· अपिच·स्वल्प राम

CC-0, In Public Domain. Digitization by eGangotri

कहिये · वक्ता न हिंहैं अन्तरजिस्त्र विषै · ऐसिभि पु
नकथं · श्रुः · फेः · श्रुः · ई दंशा कैते · उपायै · यक्तिव्यक्तिष्ठ
ता · तद्दंशा जो हैं परमेश्वर के अंशावतार · श्रीव्यासादि ति
नौने · सत्त कहिये · किये · असा जो उपाय है · तिनौने · श
क्ति सत्त कहिये प्रगट · किये है · पुन कथं भूता श्रुति · के
सि है · श्रुति · केशव वाक्य · केसा जो है श्रीकृष्ण: तिनको
वाकु वाणी है ॥ २ ॥ टिका · शिष्य · विस्नुरूपं · रामं · क
रणं च स्मर · विष्णुरूपं · विस्नुरूपं · विस्नुस्वरूपं असा
जो है राम · रमन्ते योगिनो यस्मिन्निति राम · तं राम · श्रीर
घुनाथ · जी को तत्व · करणं च · तिस करणं को भी · स्मर ·
स्मरण कर · कथं भूतं राम · केसं श्रीरामको पारिभा...

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मौर्विकेशचापं· ईशस्यचाप· ईशाचाप·मौर्विकया
सहितः समौर्विकः समौर्विकश्चासौ ईशचाप· समौर्वि
केशचापः परिभग्नः समौर्विकेशचापो येनसः परिभ
ग्न समौर्विकेशचाप· तंपरिभग्न· समौर्विक चाप·परि
भग्नकाहिये तोडाहै· समौर्विक काहि चिल्ला समेत· ई
श चाप· महादेवका· धनुषजिस्ने· पुन·कथंभूतरा
मं फारकेस श्रीरामको· दृढगुणाहारलसत्सुवृत्तवा
हुं· दृढागुणा यस्यस· दृढगुणा· दृढगुणाश्चासौहार·
दृढगुणाहारः दृढगुणा हारेणालसंतौ· दृढगुणाहार
लसंतौ· सुवृत्तौ· सुवृत्तौचतौवाहू· दृढगुणाहारल
संतौ· सुवृत्तवाहू· यस्यस· दृढगुणाहारलसत्सुवृत्तवा रामः॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हः तं दृष्ट्वा गाहारलसत्सुवृत्तवाहुं दृष्ट्वा कहियेदृढ़ दरो
वालानहिहै·गुणाडोराजीस्का·ऐसाजोहै·हारमोतियों
कातिस्कारिके लसत्कहियेशोभायमान सुवृत्तकहिये
भलेगोल·वाहुभुजाजिस्के· पुनःकथंभूतरामं·फरफे
शे श्रीरामकों·सुफलप्रदं·शोभनंच·तत्फलं·सुफलं·
सुफलंप्रददातीति·सुफलप्रदः·तं सुफलप्रदं·सुफल
जोहैभला फलमोक्षतिस्कादेणेवाला· पुनःकथंभू
तंरामं·फरकेसेश्रीरामकों आतनुप्रभं·तनु·प्रभा·यया
ताःनुप्रभा येनसः·आतनुप्रभः·तं आतनुप्रभं· आतक
हियेग्रहणाकरीहैं·तनुप्रभा·नराकारजिस्के·पुनःकथंभू

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तकरणां केसकककरणाकौं परिभग्नसमेमौर्विकोशचापं
परिभग्नकहियेखंडितकियाहै समेमौर्विक कहिये
ज्यासहित ईश कहियेसमर्थ ऐसेग्रथकारोंकाचाप
धनुअजीसूत्र पुन काथंभूतंकरणं फेरकैसेकरण
सूत्र परिभग्नसमेमौर्विकोशचापंद्दढगुणाहारलसत
सुवृत्तावाहु सुफलप्रद मार्त्तंडभैंतत्समरामक
रणां विष्णुरूपम् २ कौं द्दढगुणाहारलसत्सु
वृत्तवाहु गुणाश्चहाराश्चगुणाहारा द्दढाश्चतेगुणाहारा
द्दढगुणाहारा द्दढगुणाहारैर्लसंतो द्दढगुणाहारलस
तो शोभनोवृत्त सुवृत्त सुवृत्तश्चवाहुश्चसुवृत्तवाहु रामः॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दृढगुणाह्वारलसंतोसुवृत्तबाहु॰ यस्मिन् तत्॥ दृढगुणा
ह्वारलसत्सुवृत्तबाहु॰ दृढकहिये थोडे॰ गुणाजोहै॰ गु
णाक॰ हारजोहै॰ भागलेणावाले अंक॰ तिनोकरकेलसत्
कहिये॰ शोभायमानहै सुवृत्त॰ सुंदर॰ परिधि॰ औरबाहु
ज॰ तिसविषै॰ पुनकथंभूतंकरणं॰ फेरकैसाहैकरण॰ सु
फलप्रदं॰ शोभनानिचतत्॰ निफलानि॰ सुफलानि॰ सु
फलानि॰ प्रददातिति॰ सुफलप्रदं॰ भलेजोहै फल॰ मंदफ
ल॰ शीघ्रफल॰ तिनाकोदेणावालाहै॰ पुन॰ कथंभूतंकर
णं फेरकैसाकरणाको॰ आतनूप्रभं॰ आतानुप्रभा॰ यस्मि
न्॰ तत्॰ आतनूप्रभं॰ आतकहिये॰ अंगीकारकियाहै॰ पु
न॰ नूप्रभा॰ सप्तांगुल॰ द्वादशांगुल॰ शंकुकिछायाजिस

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषें·पुनः·कथंभूतं कारणं·फेर केसा है कारणाविष्णुरूपं·
विष्णुरूपं यस्य तत्‌·विष्णुरूप·विष्णु कहिये व्याप्त है·स
प·स्वरूप जिस्का ॥२॥ टिका: उरव: धीरा: यद्यपि·क
रणानि·अकार्युः उरव कहिये बहुत·ऐसे: धीरा: धी

मूल: यद्यप्यकार्युरुर्वः कारणा निधीरास्ते मुज्यका
धनुरुपास्यन सिद्धिरस्मात् ज्याचापकर्मरहितं मुल
घुप्रकारं कर्तुं ग्रहप्रकरणं स्फुटमुद्यतोस्मि ॥३॥
ज्ञा है पंडित यद्यपि जोभि·कारणानि·करणों नंतेषु·
कारणाकु·तिन करणाविषें·ज्यका·धनु ज्याएव·ज्यका·
ज्यकाच·धनुश्च·ज्यकाधनु·द्वंद्वैकवद्भाव·द्वंद्वसमा रासः॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सविषै॰ ऐकैकेवरावरभाव॰ अभिप्राय॰ कहैंगेकाहूंका
ज्याकाजोहै॰ चिल्ला॰ धनु॰ जोहैधनुष॰ तिस्कौं॰ अपास्य॰
छोडके॰ अस्मात्॰ ईसमैंसिद्धि॰ न॰ कार्य्य॰ किंसिद्धिन
होहै॰ अहंज्याचापकर्मरहीत॰ सुलघुप्रकारं॰ ग्रहम्
करंगास्फुटंकर्तुंउद्यत॰ अस्मिअहंभैजांहूं॰ केशवसां
वत्सरकापुत्र॰ गणेशदैवज्ञनामसो ज्याचापकर्मरहि
तं ज्याच॰ चापश्च ज्याचापौ॰ ज्याचापयो॰ कर्मज्याचाप
कर्म॰ ज्याचापकर्मगारहितं॰ ज्याजोहै॰ मौर्वी॰ चापजोहै॰
धनुष॰ तिन्काजोहैकर्मगणितादिक्रिया॰ तिस्करिके
रहित॰ ऐसा॰ सुलघुप्रकारं॰ सुतरां॰ लघुःप्रकारोयस्य
तत्॰ सुलघुप्रकार॰ सुलघुकहिये॰ अतिशिघ्रहै॰ प्र

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

टिं ६

काराजिस्का॰ जै॰ सा॰ ग्रहप्रकरणं॰ ग्रहाणांप्रकरणं॰ ग्र
हप्रकरणं॰ ग्रहमाहेसूर्यादिनवग्रह॰ तिनाकाजोहे
प्रकरणं॰ मध्यमा॰ स्पष्टादि॰ करणा॰ तिस्कोस्फुटं॰ परि
व्यक्त॰ ऐसा॰ वातु॰ करौंको॰ उद्यतो॰ स्मितयारहुवाहुं २

मूलः इष्टधींद्रा १४ ४२ नितसकईशा ११ हृतफलैस्या
चेकास्वंरवि २ शेषकंतुयुक्तं॰ चैत्राद्यप्रथग॰
युतः साद्विघ्नचक्रा॰ दिग्युक्ता १० दमर ३३ फलादि
मासयुक्तं ॥४॥ इष्टधींद्रो॰ मितिभाया॰ इ॰ २५ धी॰ ४
ईद्र १४ शाकालविषे १४४२ न्यानितकाहिये घटावणे
ईशाहृतं ११ अनघटावुकुवेमे २ ग्याराकाभागलेणा॰ रामः॥

६

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्यारा का जो भाग लेकर बैल लब्ध पाया है सो चक्र होता
है· शेष जो बाकि बचा है· उस को रवि २ हत याने बारा से गुणा
देणा· चैत्र से आदि लेकर के युक्त महिना को· जोड देवो·
पृथक दो जगै रखे· चक्र को द्विघ्न दुगणा करणा· ७० दशाउ
स पर जोड देवे ३३ तिस का जो लब्ध पाया है· दुसरे ज
गै मे जोड देवे· ॥४॥ जिसमे· दमरफलादि फल जो आया है·
उस को पंच घ्न ३० तिस मे गुणा देवे· गत तिथि को जोड देवे·
चक्र का छठा हिस्सा जोड देवे· पृथक दो जगै रखे· पहले लब्ध·
६४ चौसठ का भाग लेवे· लब्ध जो पाया है· उन जोड दुसरे
जगै रख्या हुवा है उस मे घटा देवे· विधुतन जो अगपा जिस
मे चन्द्रमा होता है· बेवार वास्ते· चक्र को पांच से गु

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

णांदेणा अहर्गणमें जोडकर्के सात ७ से भाग लेकर्के शे
शवार होता है सोमवारको शुन्य · मंगल १ बुद्ध २ बृहस्प
ति ३ शुक्र ४ शनि ५ सूर्य्य ६ ॥ अथ टीका · रवकाद्दिये
शुन · विधुक · ७ तानक · ४२ वभा ११ सूर्य्यका ध्रुवक
रवत्रिघ्नं ३० गततिथियुग्नीरय चक्रांगां ६ शाद्यपृष्ठ
यगमृतोधिपद्क ६४ लब्धे · ३ नाहोर्विवुत्तमहर्गणा
भवेद्वारस्याद्धुर ५ हत्तचक्र युग्णगांज्ञात ॥ ५ ॥
सात्ताहे · रवकाद्दियेशुन्य ० ऽ निलकाद्दिये ३ रसकुवेद
वार्द्धय ४६ ईश्वरा ११ सितचंद्रमको ध्रुवक होता है ·
चंद्रमको ३ चका · ५ घपपलेका · खगा २ जमा २ सर · रामः ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मूल· खविद्यु १० ताल४२ क्षा ११ मारगौधन्व· ख०
मनला ३ रसबाह्वय४६ ईश्वरा ११ मित्रस्तचोपसु
खाथ खगाज मो मरकता ०।४५।२ गदिन्नो विधु ७१
पुगज ॥६॥ सलाद्वौ खशरा त्र्यगो ७।२।५।०।० द्वीति
भुवाभृत्तत्वदंत्तो ७।२।५।३।२।० विदकेंद्रस्याद्वि मरगुराम
गुणाड्क४।३।२।१।० खषट्‌पमावाम्बिला ०।२६
१।७।० द्राकेंद्रस्य भृणोकु शक्रपमला ११।८।४।२।०
रास्यादिगोप्योशते सैलापंचभुपोजमाध्ययःमे
७।१५।४।२।० पत्नेपकः कथ्यता ॥ ७॥ सद्वागाञ्जकु
वेदा ११।१९।४।७।० नापनरईह विधोगुलीनागामु

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ध्रुवकाः॥

ल	चं	कु	रा	मं	बु	वृ	शु	श
०	०	९	७	१	४	०	१	७
१	३	२	२	२५	३	२६	१८	१५
४९	४६	४५	५०	३२	२७	१८	२	४२
११	११	०	०	०	०	०	०	०

अथक्षेपकाः॥

११	११	५	०	१०	८	७	७	९
१२	२५	१७	२७	७	२२	२	२०	१५
४१	६	३३	३८	८	३३	१६	९	२१
०	०	०	०	०	०	०	०	०

शके १६५१०
चंद्रमके ३
चक्रोध्रुवक
ऊ.वा.॥६॥
अथ सेला
ध्रुवभावा
सेला ३ ध्रु
२ खग्रारा
५०।० अथा
राहुकाध्रु
वकहाता
ह इति
ध्रुवामग

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का॰ भू॰ २ तत्व २५ दंता ३२।० विदबुद्धकेकेंद्रका ५
धि ४ गुणा ३ आडव २७।० सूर्यगुरुका॰ रवकांक्षिपेण
न्य० यदूयमा २६ बाण्विला १८।० बृहस्पतिकाध्रुव॰
अथ॰ शुक्रकेंद्रका कृ १ शक्र १४ यमाला २।० अथ
राश्यादिशनैसेला ७ पंचभूता १५ यमाध्यय ४२।
रिमध्रुवकरुव॰ रसमे आगदे्यपकाकहताहुं॥ अथम
द्रागोज्ञाभाया॥ रुद्रा १२ गो ज्ञा १९ कुवेदा ४१।० सूर्य
कादेपकाङ्खा॰ रिहविधा॰ चंद्रमका॰ शूलि॰ ११ गाष्ट
१९ यदृद।० चंद्रमेका उचका॰ ५ रूपत्यग्नि १७ दवा ३२
॰ स्तामसि॰ राहुका॰ खशून्य॰ ३ उव २२ अग्याग्नि ३८।०
५थमंगलका॰ दिग १० शैला ७ ५।१८ अबुद्धकेकेन्द्रका॰

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विवकलनवृभं॰ चंकं भंचशोध्य॰ विवकलनवभं॰ चंक२ नौ
म२७ सत्ताईशकोशोध्य॰ कर्कबुदकाक्षेपकहोताहै ९ न
वपर८ नौनहहनोकिवि चाठकारशुन्यस्थाने २२ ऊनहेश
सत्ताईशशुधो ३३ तीति ३३ बुदकाक्षेपकहुवा॰ पुनिवृह
स्पतिका॰ चद्रि७ चश्वि२ भूपा १८ गुरुकेंद्रराशिका॰ ५
द्रि७ नख२० नव८१० शनिका॰ गा८ तिथि १५ स्वर्ग २१
८॥ दिनकाजाहगराामम्रहचेसाजाहै चूहर्गराति रवि
यंह भवउत्पतिदिवसस्मारस्र्यादिखेटग्रहोंकितिनोंविधे
पूकनिघ्न ध्रुवकोऊनघटाय कर्केक्षेपक एकजोडके
कंमध्यमस्यात मध्यमाहोवे॰ निजस्वपनेर ८ शोकि
याजनौविध्रंदूत ८ संभाग नके॰ ग्रहोंको चंद्रमाकिच

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किविषं· प्राकपूर्वदेशवालोंनेहूणां स्मितकर्नी· परं· पश्चि
मतर्फवालोनेमध्यमाविषेंस्वधनकर्नी जेमारूपजोजनमें
इसंभागलेंक ४१० पायाजाताहै·॥ ६ ॥ द्युवज अहर्गणा
कोस्वदाजगरघ रव· नग ७० एकजगे सहत्तरकाभाग
लेणा· शेशरहै ६० संगुणायाफेर ७० भागफेर ६० गुणा·
७० भागतिन अंशादिभागपावें· दुसरेजगमैआरव्याहुवा
है उसमेंदिनघटावणा· स्वस्यकाजोमध्यहैसोशुदका· औ
रशुकाविवहिमध्यमाहोताहै· गणा अहर्गणामें· रवति
तिथि १५० दोभागलेणा· अंशकाघा· अंशकहै आदि
जिसविषे· लिप्तिकाजो· कलाविकलामेलिप्तिकाघटा
देणा· ध्रवकउन· क्षेपकयुकमध्यमस्यात्त· मध्यमा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

टी.

१० वषट्‌ ११।१२।६।० तुंगाशात्यम्बुदेवा ५।१७।३३।०
सामास्तियमुडवोष्टागि ०।२७।३८।० याथोमहि्जे
दि१।०शोला ० योगे जकंद्र विवकलननवमं ८।२९
३३।० दृजित्तद्राम्बिभुपा ७।२।१६।० सौक्ककेंद्र
हाघाद्रिनखनव ७।२०।२।० ग्रनागोत्तिथिस्वगणु
लप२।१५।२७।० ॥ ८ ॥ दिनगणाभवखेटचक्रानिघ्न
ध्रुवनाद्वियसमुदयेस्वात्तेपयुगमध्यमंस्यात्त नि
जनिजपुररखात्तस्थितायाद्दुसंलवलिप्तास्वगणे नाघा
मिदापरयाक ॥ खखनग ७० लवहीनाध्रुवकोर्कस्त
(४) क्राखर्तिर्यंहृतगणनास्तिनिस्वांशकाद्याःग राम

१५०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होताहै। गणा-अहर्गणाकौं मनु १४ से हत-गुणाणा-इंदुचं
द्रमाकेवास्ते-स्व-ऽहर्गणाकोदोजगेरखे-एकजगे-गद्विभू२७
सत्ताईसकाभागलेणा-शशांशु-द०-भाग २७ गुणियाद० भा
ग २७ तिनभागलेणा-चंशादिकुसेरजगमेघटादेणा-गणा-
अहर्गणमे-स्व-मनु १४० हतभागलेणादोभागलेणाचं
शपूर्व-चंशपूर्वहैजिसविषे उनोकिकलाविकलामे
लिप्तिकाजादोभागपायेहैं-उनघटादेणा-क्षेपक
ऊन-क्षेपककुंकमध्यमस्यात्-मध्यमाहोताहै॥२०॥
नवग्रहादिनीमित्तिभाषा:दिनसंघ-अहर्गणाकौं-२ तौसे
भागलेणा-चंद्रतुंग-चंद्रमके उचके उचकोतिनल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वादिककोपावे·धुक्रन·हर्राणमे·खनग७० सहृतरसेंभा
गलेवेलिप्तिकाकोकलाविकलामेजोडदेवे·ध्रुवकअन·
दीपकयुक्तमध्यमाहोत्ताहे॥नवकुमि२८ईसुवेदे·४५
घस्रसंघ·जोहे·अहर्गणाकों·द्विधादजगखवकर्के:
एकजग१८ऊनिससे·भागलेवे·तिनलवादिककों
पावे·एकजग४पपेतालिससेंभागलेवेउस्केतिनभा
गपावे·कलाविकलामेजोडदे·जेसाठसेंबडतोचडादे
अशादिककोंपावै·फजो१८ऊनिससेंजो अंशका
शकादिपायेहे·जसेंं४पपेतालिसकाभागजोडदेवे·
चक्रशुध·उक्ो·१२ वार·पुर्णा·पुर्णामेघटादेवे·ध्रुवक पुर्ण
अन·दीपक·युक्त·मंध्यमस्यात॥२२॥टिका·टिनगात

दोजंर
जेघाट६०
सेंचडतो
अंशकम
गोडे·ग
लम॥

०२

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो है। ५ हर्गणाऊस्को। दिघ्ना २० दशासें गुणा दराा। द्विधा।
दोजेग ।५। एकजेग अंककुभि १२ अनिससे भागलेवै
तिन अंकाका पावै फरजो दुसरे जेग दशासे गुणा हुवा हर्ग
णा है। उस्का विशेल ७३ तो हत्ताका भागलेवै दो भाग पावै
जे साठ स चढ़ता अंश का विचढ़ावना चढ़ना नाच लवै।
फर। उस्का विषय घटादेवै अनि १८ तक भाग में। धुवकजन।
से पक एक मध्य में स्यात्ता गया अहर्गणाकों। २ घ्ना। ति
नसें गुणा कर्के। त्वे दोजेग रखें। वसु हर्ल २८ एक जेग २८
अठाईसका भागलेवै अंशादि तिन भाग पावै जो भाग
पाये है ३ उनकों जोड दुसरे जगामें जोड़ा था हुवा तिन का गु
णा हुवा अहर्गणा। उस्मे अंश जोड देवै जो २८ का भाग

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के० साज़ोड़ बुदका शिघ्रकेंद्र हा ताहे० गरा० १ हर्गरा को
१ हि गुण ३० भाग लेवे दो भाग लेवे० लिप्ति का कोंक
ला विकला मे ऊन घटादये धावक ऊन दीपक बुक
मध्यमस्यात्त ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
ण मनु १४ हत्त पिंड: स्यादिषु ७ भाग हिन: ख
मन १४० हत्त गणो नालि प्ती का स्यांश पूर्व ॥ १० ॥
नर्वहत्त दिनसंघश्चंद्रतुंगं लवाद्यं भवति खनग ७०
धुध्रजा पत्त लिप्त नवकु भि १९ ईक्षुवेद ४५ घस्त्र सं

टिका ॥ धुपिंड १ हर्गरा मे १२ धारा का भाग लेवे० लवा
दिकको पावे० गुरु के० धुपिंड० १ हर्गरा मे खशैला ७०
सहत्तर का भाग लेवे दो भाग पावे लिप्ति का को० ग्रंश

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कवियलिप्तिकाकौं उनघटादेवे·ध्रुवक उनदोपक
युक्त मध्यमंस्यात्·द्विपिंड अहर्गराकों विनिघ्नं·त्ति
नसं गुरणादेवे·द्विधा·दोजगेरवे·एकजग अनोपो
चपसं भागलत्तिनभाग अंशादिककापाव·डुसरज
गमजोर वाकुवाहै·अस्मधुभाज्ञ १०१ एकसकया
सिकाभागत्तिन अंक अंशादिक कोपाव फेरजोप
यलाजा अंशादिकपायहै·जोफेर अंशादिकपाय
वा है उन दोनाकोरत्तां·दोनाकोजोडदेवे भरुका आ
शुकेंद्र होताहै·ध्रुवक उनदोपकयुक्तमध्यमंस्यात्
१३॥ दिनगरा अहर्गराम·रवाय्य ३०·ध्रता·३०·तिरासे
भागलेवे·त्तिनभाग अंशादिकपावे·शनिकवास्तेग

मिश्र
गोत्सतिक ६ रे उस्मरवाभीधुना इत्यादि ८ अंकनके [illegible]
३० ऐ चक्कर्णा ६ भया होनादे घड़ी पल २५ को होता है सो
मकार [illegible] भावार्थ ॥१॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गाः ऽहर्गणो· षट् पंचभू १५ ईहृतभागलेवेदो भागपा
वे· लिप्तिकाकों कलाविकलामेजोड़ देवे· ध्रुवक· ऊन·
क्षेपकयुक् मध्य मंस्या· गोत्ता ५२ गजा ८ सूर्य्यवि
घा द्विधाप्ता त्फललव· कलिकेवंच स्यादयुश्च ग्ना
शुद्ध ॥ २३ ॥ दिघ्नोऽ० द्विधा दिनगणाकुभि १२ लि
प्तोले ७३ भक्तफलांशाककलां विवरं कुजस्यात्त ॥
त्रिघ्ना गणाः स्वव सुहृल्ल २८ वयुक्तशीघ्रं· केंद्रल
गति ५८ होतिहं मध्यम· शशि· चंद्र· माकि· ऽभ्र· गो·
श्वा· ७२० पंचाग्नयो ३५ चंद्रमकिहुर्दंषष्ट्डिढला
ध्ध ४१ ६ चंद्रमाकि उचाकि गतिहुर्दा ॥ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ रामः॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राहुकि॰ध्रुवं॰३फु शशिनो ८।२६ राहुकिडु वि॰६
ख्ज मंगलकि॰ इंदुराम ३१ साकोष्णिता २६। ३६
मंगलकिडुवि॰ भुदके केंद्रचलकेंद्रकी लिप्ता होति
बाधा हियुगा नगणा नलिप्तम॥ २२॥ ध्रुपिंडार्क १२
लवाद्यागुरु स्यात ध्रुपिंडात्तवघ्नलां ७० शलिप्ता
विहिनः ३ निघ्नाद्दि पिंडाद्दिधात्तपक्षुभाग्ने २८१
रवाप्तांशयागा भगोराहुकेंद्र ॥ २३॥ रवाग्य ३० घ्रु
तो दिनगणाआमुरवः शनिः स्याः स्पट पंचभू १५६
हे १८।६ जिना २४ बुदके केंद्रविलिप्ता होति ह॰ शरापरवं॰
गुरुके मध्यमकिगति होतिहं शुक्रके ध्याश केंद्रकि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्र·ला·स· हृतगणात्फलं·लिप्तिकाद्याऽगोल्लाप८गजा८र
२४ विगत्तिःशशिनोभगाद्या १२० पंचाग्नयो३५ष्ट
षड्लिप्ता६४१ उच्चभुक्ति॥१४॥ राहोस्त्र्यंककुश
शिनो१२ सज्ज इंदुरामः३१ लवाब्धितो२६ चल
केंद्रजवोर्थहिल्ला १८६ लिप्ताजिना२४ विकलि
काष्वगुराशशा५ख०श्र्यकाशुकेंद्रगतिरद्रिगुणा
३७ शनद्व २१०॥१५॥ मारार्कपिविधुस्वमंकक
लिकोनात्रागुरुस्त्वार्यजो·स्याद्रचंकुजस्तके
ऽधकमथा·पंशरगुभागाशनिः धीर्क्रकेंद्रमथार्य
मध्यमगति·मयांतिहकुतुल्यतां·सिद्धसोरिह रामः॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पर्वधर्मनयसत्र॰कार्यो दिकं त्वादिशोत॥ १८॥
इतिकेशवकर्मावत्सरात्मजगणेशदैवज्ञविरचितेति
थीतरस्य ग्रहलाघवमध्यमाधिकारप्रथमटिकासे
हितंसंपूर्णम॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
गति॰रविगुणा ३७॰शनिकिंदी २१०॥१५॥ टिका॰गु
दकि घोर शुक्रकिजासुर्यकीगतिहै सो ईनकिविज्ञान॰
टिका॰सार॰ अर्क अपिविधु॰च॰ आचार्य्यकहताहै
कि॰मेन॰ अर्कसूर्य॰विधु॰चंद्रमा॰उच्च॰यह॰तिन॰सा
र॰मतासंलियेहै॰ सूर्य्य॰सिद्धांत विषेमिलताहै॰ अ
ककलिकानाहै॰ अंकाख्यता॰कलिका॰ अंककलि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का· अंककालिकाभि· उनाख्या· सो अज्ञ अंककालिको
नाज्य· अंककालिकाजोनौकलाहै· तिनोकर्के उनके
ह्रियफमी ऐसा अज्यकह्यिय चंद्रमा लियाहै गुरस्क
चार्य्यज· आर्य्यमत्ततेलियाहै अस्तनाहूचे· अस्
कुपराख्य· अस्थाहू· अस्कू· मंगल· राहुभि आ
र्य्यमत्ते लियेहै· कजनकेंद्र· कस्माज्जातंकजं· तस्यकेंद्र
कं· कजंचतात· नकेंद्रकं· कजनकेंद्रकं· कजकह्यिये·
ब्रह्मसिद्धांतमे· उत्पन्न· ऐसा· ज· बुधकाकेंद्र रक्खाहै·
अथ आर्य· सप्तभाग· शनि· अथ रस्तउपरांत· आ
र्य्यं· आर्यसिद्धांतविषे· सप्तभाग· रविभिभाग· रविभा राम:॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग·ईषुभागेनमस्ति·सषुभाग·सषुभागकहियै·पांच
भाग·अधिकशनि·शनैश्चर·मिलताहै·अथशोकेके
द्र·आर्य्यमध्यम·गति·अथईत्तअपरांतशोकेंद्र
कस्यईदं·शोकं·शोकेंकहियै·शुक्रकोकेंद्र·आर्य्यम
ध्यमागतिस्यततः·आर्य्यमध्यमगति·आर्य्यपरांतम
ध्यमहै·गतिजिस्की·असाहै·ईसहषुतुल्यतांयांति·ईसक
हियै·पयहै·हषुतुल्यतां·हशस्तुल्यतां·हषुतुल्यतां·तां·
तोंहषुतुल्यतां·हषुजाहै·हष्टितिस्कीतुल्यताजासहशाका
भागहैतिस्को·यांति·प्राप्तहोतहै·स्फासिद्ध·तेःपर्वधर्म
जपसत्कार्य्यादिकेषु·आदिशत्·ईहै·यहां·सिद्धसः
सिद्धकहियै·टीकवेठ·अमतो·वहजायहैतिनोकर्के

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पर्व॰धर्म॰जपसत्कार्य्यादिकं॰ पर्वाणिच॰ धर्माश्च जपाश्च सत्कार्य्याणिच॰ पर्व॰ धर्मजपसत्कार्य्याणि॰ पर्व॰धर्मजपसत्कार्य्याणि॰ आदौ यस्य तत्॰ पर्वधर्मजपसत्कार्य्यादिकं॰ पर्वाणिच॰ धर्माश्च॰ जपाश्च॰ सत्कार्य्याणिच॰ पर्व॰ धर्मजपसत्कार्य्याणि॰ पर्व॰ धर्मजप॰ सत्कार्य्यादिकं॰ पर्वग्रहणादिधर्म॰ विवाह॰ व्रतबंधादि॰ जपादि जो सत्‍भलकार्यादिकहै॰ तिस्कोंतो॰ ज्योतिशास्त्रजानणवालो॰ आदिशत्‌॰ आग्याकरे॰ ग्रहकूं पडतो॰ दिनेकूंठपडताहै॥ इतिश्रीग्रहलाघवसिद्धांतस्य मध्यमाधिकारटिकायां प्रथमः॥१॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मूलः दोस्त्रिभोनंत्रिभोर्द्धविशोध्यंरश्मेो६ चक्रतोर
का२ धिकंस्याद्भुजोनं त्रिभं ३ कोटिरेकैककत्रि ३ त्रि
भेस्यात्पदं स्फुटं मंदोच्च मस्मादुयों १८ शो भवेत् ॥१॥
मंदोच्चं ग्रहस्वजित्तं निगदितं केंद्रं तदारव्यं बुधैकेंद्रंस्या
त्स्वमृणं फलं कियत्तुला घ्येथा विधेयं रवे केंद्रं तद्भु
जेपचरे२ लवानघ्ना नखा २० लाप्ट लक्षु तज्जोर
शोनगष्टु ५७ भिपरि: हृता स्तेशादिकं स्यात्फलं ॥२॥
विधाकेंद्रदोभाग पंचोन ६ निघ्ना: खराम ३० पृथ
कुतन्नखा २० शोनितेष्ठ रसाब्धे ५६ हृतास्ते लवा
द्यं फलं स्याद्विधं स्फुटो संस्कृतो स्ताचतान्या ॥३॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्रिभोनंदं॰ नीशि॰ चततानि भानि॰ त्रिभानि॰ त्रिभस्य ऊनं॰
त्रिभोनं॰ त्रिभोन कहियत्तिन राशिसें कम होवे तो भुजज्या
जानि॰ तिन राशिसे अधिक होवे तो रसें शोध्य ६।०।० छ्ह
राशिमें घटायदेणा सात ७ आठ राशी होवे तो छे रा
श्यादि ३ नक्रानि॰ अंशकलाविकला पूर्ववत्तरह॥ अ
काधिक॰ चक्राद्विशोध्यं १२।०।० बाराराशिमें शोध्य॰
घटादेवे॰ चारों॰ अंकोंको॰ भुज स्यताहै॰ गतिके वास्ते॰
केंद्रस्य भुज॰ भुजस्यका ३।०।०।० तीन राशिमें घटायकरके को
टि होतिहै॥ त्रिभि॰ तिन ३ राशियोका कोटिकाय
का पद होताहै॥ सूर्यमंदोच्च अष्टादि १८ अंशादि हो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तौहै· ईस १८नै ३० सं भागादियातौ २।१८।०।० उच्च
होताहै इस उच्च विषै सूर्यकामध्यमा घटायातौ बुधे· कें
द्र निगदिंतै· बुधजापंडितहै· केन्द्रकों· निगदितकेंद्र
कहतेहै· केंद्रं तद्भुज· तिसकेंद्रके भुज सूर्ववत्तु कर्के·
भाग राशिको गुणायतॄणा· राशाकौ ३० सं गुणा कर्के· रव
चर लव· इस त्र्यंशादि त्तिन भाग लेणा· ३ ननिघ्ना नरवा·
उन काहियै घटाय गये नि घ्नक हीय गुणागये २० कवि
षं· नद· तिस्ते पिछु गोमूत्रिकाकरै ॥ १ ॥ टिका· जोस्ये
कतिन लवादिक पायेहै जैसे लवादिकको दोजगो र्षे·
ये कजग विश २० विशमें घटावे· विश २ विशमें जोध

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गहै उसको उननिघ्रा।कहत्तेहै फरजो लवादिक आरः
उननिघ्नाहै उसको गुरगादेवे गामुत्रिकाम २।३१।५६
फरयति २।२।६ फरगामुत्रिकाकोदो २ । २० । १०
जगर २।२।२ घ २२।२२ एकजगानोद ६ ६
संभाग ३६।३६।३६ ६ ५३।५३ गा नोकाजा लवादि
५४।५४।५४ २५।२५
पायाहै उसको नगमुभि ५७।०।० सत्तावन पुरगरमे
घटादेवे यैक्य उस आंशादिकको ६० से गुराकर्के
निचेका आंकजोडकर्के फर ६० से गुगाकर्के फरनिच
ला आंकजोडकर्के फर ६० से गुणा कर्के फरनिचला
येसा येक्य गामुत्रिकाकाकर गामुत्रिकाजो ५७।०।० रामः॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गो मात्रे का का जो अंक है उसको द्र० से गुणे उस अंक मे ५७ सतावन का भाग देवे जो घट्याई है उसमे भाग लेवे मंदफल पलत स्यात् ७ मेषादि केंद्र होवे तो ऽ
मेषघटाई है उसमे भाग लेणा· भाग लेकर· मंदफलं स्यात्· देवेतुला
मंदफल होत है उस मंदफल का केंद्र मे· १।२।३।४।५।धन दिधनदे
जोडणा· केंद्र· तु· ६।७।८।९।१०।११।१२ तुलाघटादक्षं· मू णा ऋणी
र्यमध्यम हुणा धनकर्णं· मंदस्पष्ट सूर्य होता है· ॥ अथदे
शांतर· ॥ अपणा पुरकि रेषा लंब २५ पचिस ईकसें भाग
लेवे· और जो शेष रहे उसको द्र· गुणा देवे ६० साठसे भाग ले
णा देशांतर होता है· ॥ अथपलभा· ॥ ७।७।७ तीन जगर
षे· चरखंडके वास्ते· पयलि पलभा· १० दशसे गुणा दुस
रि पलभा भुजंग ८ आठसे गुणा तिसरी पलभा· १० दश
से गुणी करके तिनसे भाग लेवे· तिसरा चरखंड होता है· गुणा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

टी॰
१८

कार्केईत्तनिकुलि॰ ७०।५६।२३ इहचरखंडकुवे॰ ॥ अपनां
शकेनसहित सायनखांसु॰ अयनांशकोजोडदियामं
दस्पष्टमसायनांखांसुहोताहै॰ अवउसखांसुकाभुज
करो॰ दोत्रिभानंत्रिभाद्रूमिति॰ इसश्लोकसेघटायक
केपुरीहोवेतो॰ ७०गुणाकहोताहै॰ १ एकराशिनापद्गुणा
कहोताहै॰ २ दोराशिभुजहोवेतो २३ गुणाकहोताहै॰ कम
ईस्वायहकि २३ तेसगुणाकहोवेतो॰ सत्तर ७० और
पई ६ छपूंजाकाजोडदेव॰ राशिकामध्यदेव और तेसे २३ तिन
अंकोकोगुणादेवु॰ दोकातो ६० सेंचखदेवु॰ ३ परतिसरमें
२ राशिकाभागदेव॰ सत्तर और छपूंजोडेहैं॰ उनोमआ यान॥
आ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उदवे॰ चरहोताहै॰ चरकों ६॰ सें चढ़ादेवे॰ चरसंस्काररहो
भागेदकर्के सोजफे २३ गत्तेउप्रांत १३ गत्ततक॰ याम्यगो
लकेविषे २५।० पूर्णामे चरसंस्कार घटादेणा॰ चैत्र
१३ गतेउप्रांतसोज २३ गत्ततक॰ सोम्यगोलकेविषे
चरसंस्कारकोजोड़देणा॰ दिनार्द्धहोताहै॰ दिनार्द्ध
कोदूणाकर्के दिनमान होताहै॰ दिनमानकेशुधे
कर्के॰ रात्रिमानहोताहै॰ रात्रिमानकिघटीम २ सेंभा
गलेकररात्र्यिर्द्धहोताहै॰ रात्रिअर्धकों ६॰ मेशुद्ध
कियातोमिश्रमानहोताहै॰ अर्द्धरात्रि और दिनमा
नजोड़दियातोमिश्रमानहोताहै॰ अयनांसायन॰
सूर्यकोदेवे॰ अजवड़षहरणं॰ तुलाखडवधनं॰ च

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रसंस्कारकोतुर्यकिघटि· औरफलामे· हुआ·धनको·
सूर्य्यशात्कालिहोताहै· अथचंद्रमेस्पष्टकाटिको·
अथचंद्रमकिचैकि·सूर्यकाजोचर [illegible] उस
कोछिन्नहुणाकर्ना· औरनवधृत औरहनवोका
भागदेणा·दोभागपाणो·तोचरसंस्कारहुवा·जेसूर्य
मघटायाहोतो चंद्रमेभिघटावणा औरसूर्य्यमे
वियुक्तजोडाहोतो· चंद्रमेभिजोडना·मध्यमाकेविषे
चंद्रमकेमध्यमामे· अथःदशांतरः ४ संस्कारदशां
तरसदाघटायाजाताहै· युक्तजोडाकाभिनेजाताहै· अ
थमंदफलम्· संस्कारः सूर्यकाजोमंदफलहै·ज रामः।। देशां· ४ १०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सको २० सत्ताईशका भागदेणा तिन चंकोको पाव
णा· सूर्यवत्त देणा मदफल घटायहोत्तो चं· घटा
णा· युक्त जोड़ा होतो जोडनात्ति नवेल्कोरदके च्य
कि णाति हो ३ चक्रे मध्यमा मे चक्रिको घटायेदिया
तोकेंद्र भवति· केंद्र होतो है· केंद्रको भुजकर्णो· द्विघ्नि
भोनंत्रिभाद्व: ईसश्लोकोंसे· उसभुजकोंगुणिया
नृशा २० नृशासे गुणाकके ६० से भाग लेणा· फर· अशगु
६० निचला चंक जोडकके फरभाग ६० से लेणा· फर· श
शा·गु·६० निचितंचढ्ढकके फरभाग लेणा एसत्तिन
भागलेणा· उसलवादिकको दोजगरखे· एकजगता
२·० २ सर्जा २ मे घटावे· फर तृणापुर्णमे जोघटायाहै च्यो

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रजोलवाद्दिकहै॰ जनाकौ मोमिमुत्रिकामदेवे गोमुत्रि
कामे अपसमेगुणो॰ गुणाकर्के॰ दोजगरये॰ दोजेगरये
कर्के॰ येसि॰ गोमुत्रिका ऐतनिकुई॰ १२२ ई॰ १२२ तो
एकजगमे विशासं २० भागलेणा॰ शेशरहे॰ जसकौ छ
गुणाकर्के निचसे चढायकर्के २० भाग॰ फेर॰ शेशगु
णाई६० निचसे चढावे॰ भाग॰ २० ऐसे हि तिनव्यंका
कोपावे॰ एसहे॰ ५६।०।० मजसकों व्येशादिककोघ
टावणा तबउस्का ऐक्यकर्ना॰ फेरगोमुत्रिकाकौ विये
क्यकर्नो॰ फेरगोमुत्रिकामे ५६।छूएंजापुणामे घय
याहे उस्काभागलेणा॰ भागलेके॰ मंदफलहोताहै॰ रामः॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मंदफल नै किमे जोड देणा या॰ केंद्र रव करके चंद्रमा का
घटा या तो॰ चंद्र मेका प्रत्त काली स्पष्ट होता है॰ शुभ
रससे जगजगतिका टिका करहता हुं॥

मूल॰ केंद्रस्य कोटिल वरवाब्धि २० लवाननिघ्ना
रुद्रा ११ रवे स्त्रिकु १३ हृता॰ प्राशिनो द्विनिघ्ना॰ स्वां
गा ४६ शकेन सहितः स्वगतो धनर्णं केंद्र कुलिस्फुरा
यङ्गगत स्फुटा स्यात ॥४॥ मेषादिगे शायन सूर्य॰
दिनार्द्ध पाभा पलभा भवरसा त्रि ३ स्याहता स्युर्दश
भि र्भुजंगादिग्भि १०।८।१० स्त्र राद्धा निरुगा द्धृतांत्या
प॥ स्या च्चसायनांशाशुभुजर्क्ष ०।१५८।२३ तं त्य

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ॐ

मू॰ २१

चराईयोगोलवभोग्ययातृ खाग्न्याप्तियुक्तस्त
चरधनर्णोतुलाजषड्ग्तपन्यथास्ते ॥६॥ दयूनस्च
रमणोविलिप्तिकासु॰ मध्येद्दोह्वि२गुणा३नवा२
ष्टांकलासु॰ भत्तं २१ तद्युमणिफलं लवदा॰ध्यद्यू
न४।४।४खरस६०हृतशकोयनांशा ॥ ७ ॥ भक्ता
ष्यर्कविधोर्लवा यमकुभि २२ यातानिथि: स्यात्फ
लंशयंजातमिदंह्राद्धपतितै॰ भोग्यांविनिघ्नात्त
यो॰ भुक्तांतरभाजितास्बघटिकायातेष्यकास्यु:
कमात्पूर्वाद्धंकरणांबवाद्युततिथ्यद्धि२घ्नादिनष्टो

राम:
२१

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भवेत्॥ ८ ॥ तत्संकल्यपरदलेनयशकुनेस्तुरुस
भूतोनरादर्कश्चार्थविधोश्चशर्केसितगोलिनो
खखाश्च ८० इत्तायातेस्त्तोभत्युतिक्रमाद्गगन
यणनिघ्नो६० गतयातयोः रिंदाभुक्तिहृतंजवक्ष
विहृतोयातेष्यनाडिकमात्॥ ९ ॥ इतिकेशवसां
वत्सरात्मजगणेशदैवज्ञविरचितेसिद्धांतरहस्यग्रहलाघ
वे चंद्रार्कस्फुटीकरणाधिकारद्वितीयः॥ २॥ श्रीरामोज
अथसूर्यकिगतिकाटिकाः सूर्यकेंद्रकाभुजकनादि
स्त्रिभोनंत्रिभोर्द्धं भुजकिकोटिकोनि ३ तिनपुराशेम
घटाराशितवकोटिहोतिहै लवादिकराश ३० तृशसें

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुराद्रगीपर· च्यंशको चढावे· विशाका २० भागद्रेगा
शशा६० गुणाकर्कनिसे चढायकर्क २० भाग· लंकाकर्क
शशागुणितयाद्ध० नि· चढाकर्क २० भाग· दककेतिन
लवादिकपावे लवादिकग्यारा ११ मेघटायदेगा·
जोग्यारामेघटाया औरजो लवादिकहै· उनकोंगोमु
त्रिकामद्रवे· गोमुत्रिकामे १३ तेराकाभागलेणा द्वा
भागपावा ३४५६७८ धनं ९ १० ११ ११२ १२ हणांग
तिकर्कादौधन· मकरादौहणं· मध्य· गतिमेषभें· कं
द्रकोदेयकर्वसूर्य्यका· च्यथ चंद्रगतिटिका ३ भं· चं
द्रमको केद्रका भुजकर्ना· भुजाकेकोटिकरे है पुर्णार रामः॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मे॰ घटावे॰ सूर्यवत् चंद्रमाकिका होताहै॰ फारजनमा
मुत्तिका भवेत्ताडु घ्नरडुणिकानि॰ औरदोजगारपे॰
एकाजगाद्वेकंसंभागलेणा॰ ३।३॰६० निचेचढाना
६० क्लंतभाग॰ ३।३॰६०॰ यु॰ औरजोडुतजेमरयाहुवा
है जस्मजोडदेवे॰ फार॰ केंद्रकोदयकर्के चंद्रमेकाम
ध्यगत्तिमकि॰ गतिकर्फोदोधनं॰ मकाटो हुआ॰ ३।४।
५।६।७।८ धनं २ ९० ११।०।११२ हुआ। इतिद्वितिय
प्रकर्णं॰ शुभमस्तु॥ अथभौमादिस्फिष्टा॰ भौमादिकेज्यविहि
मध्यमरविस्याद्या शुकेंद्रबुविद्धविद श्रृवात्तत्ता॰ भौ॰५
किं॰ शनि स्पष्ट॰ बृ॰ स्मोका मध्यमास्पष्टके मध्यमाविवे
घटायकर्के आग्र केंद्रं भवेत्॰ आग्रकेंद्र होताहै॰ ...

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मध्यम अाशुकेंद्र वने हुव होतेहैं. बुध. शु. संस्कार

सूर्यके मध्यमा विषैदेणे. स्पष्ट होतेहैं. अथ भौम

के मध्यमा सूर्यके मध्यमा मे घटादेणा. अाशुकें

द्र होताहै. सोइं छ राशि अादि होवेंतो १२।०।००

बारपुरी. ३ मे घटादेणा जो बारा पुरी मे घटायाहै.

उनको. अंशादि कर. राशिको ३० गुणासे गुणा देखे.

१५ पनरो का भाग देख. पुन. राशिका जो भाग है. २

न समान चलांक खंडको देखे. ऊस. चलांक ख

डके अंकोको दोजगरपे. एक अावेतो. दुसरेमे ख

डमे घटादेखे. दुसरेमे ना घटेतो. पयले घटावे. कम रामः॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सेघटैतोचयफलहोताहैं॰ अल्पायघटैतोचय॰फ
लहोताहै॰ घटायकर्जोशेशअंकरहताहै॰ अन
तिनशेश अंकोकोगुणादेव॰ तलोकदोअंकोनि
चेसं ६०शाठसें ऊपरचढादेव ऊपरकेतिसरे अं
कोमे १५ पनरोकोभागलेव॰ शेश अंकोकोहु०गुण
करोनिचलेअंककोऊपरजोडकर १५ भागलेवे॰ ई
सिक्रमसेतिन अंकचलोकखंडकोनिचपावेचय
होपयुक्तकरे॰ क्षयहोवेतो ऊनकरे॰ छहता १०से
भागलेव॰ शेश॰ अंक६०गुणाके॰ तलोकको ऊपर
जोड़ ईसिक्रमसेतिनभागपावे॰ योगमध्यमेचरफ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लंस्यदलंभवत्यान्तिम अथाशुकेंद्रके मंदफलमे दलं
२ दोसे भाग लेवे अथाशुकेंद्र मेषादि तुलादि ऐसे एक
के। अखिलं नाम सफुटमध्यमाको विषे दद्यात् देशा
साध्यो ध्यादि खः ग्निनाग ग्रहतस्यान्मंदकेंद्र कु
जात असमंदस्य स्फुटको साध्य (ध्य) ध्रुवकर्ना मं०४।१।१।
बु०१२।०।०।० बृ०८।०।०।० शु०३।७।०।०।० राश्यादि
मृदुकेंद्र सातहै। मृदुकेंद्र भुज। मृदुकेंद्र का पूर्ववत्
भुज करना। राशाको ३० तीशासे गुणा करना। अंशक जो
ड करके दिनाम १५ पनराका भाग लेना। मंदांक।
छोटे खंडको भाग के। सदृश खंडको लेवे। आगे

शुद्ध ३ आठ
०००

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

केंद्रमेघटाएकार॥ ३।३।कैते जनातिन॥ ऋंकको
गुणाकियानिचलदो ऋंकोको ६॥ ऊपरचढाकरदि
नैभक्ता ।५॥३ तिनभागलया खंडाके ऋंकभजोड
देव खंडान्तरजा ऋंकहे गतिसेगुणाकरचलगुणा॥ ५
रहत्ते १०दशसेभागलया॥ तिन ऋंकपावै॥ मृदुकें
द्रमेधादि तुलादि दरवकेधन॥ ह्णा॥ मध्यमाको कर्नो॥

ह्रं॥ मं॥ स्प॥ हे मध्यमामधनहोवेतो ऋाणुकेंद्रमे १०दशकाजो
भागहे ह्णाकर्ना॥ ह्णा होवेतो ऋाणुकेंद्रमेधनकर्नो
शिघ्रकाकेंद्र होताहै॥ ईदी शिघ्रकेंद्रमेसाहईनभाग
धं॥ घ सेढ्ढसेघोन होत्ता १२।०।॥ मेशोध्यघटाद
ला॥ तदंशा॥ तिस्कों ऋंशकर्नो निचका ऋंकजो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

टी. २५

ले

डकर्के २५ पनरासे भाग देवे. फेर चलांक वडे खंडको
देवे छवेवत्त चय-क्षय को देखकर दशके भाग सेती
न अंक लिये जाते है जनाको मंद स्पष्टके विषे शीघ्र
केंद्रका देखकर के देव स्पष्ट होता है ऐसे है सबका क
मैं है. शीघ्रकेंद्रका अंत रांक गतिके वास्ते होता है.

॥ अथ भौमादि गतिः॥

भौमा चलांक विवरमितिः शीघ्रकेंद्र वयत कांच
लांक खंडाके विषे मंगलके वासे शर इत ५ पांचसे
दो भाग लगे चय होवे तो मध्यम गति विषे जोडवे.
क्षय होवे तो घटावदेणा जे मध्यमगति कमाते होवे रामः॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तोईन्नचंद्रतोमेगतिकोघटादेवे·सभकायहीक्रमहो
ताहै·बुधकादोजगारखे·एकजगाकेपलांककंडोमे
५कोभागलेणा३सेजगाजोडदेणा·चयक्षयदेख
केसूर्यकिमध्यगत्तिमेदेणा·बृहस्पतिकोतिनसेभा
गलेणा·शुक्रको४भागलेणा·शनिकेवास्ते३गाक
कों५पांचसेभागलेणानिजरकाहियेअपरिगारम
ध्यगत्तियाकेविषेचयक्षयदेषकर्केधनऋणकर्नां
मध्यगतिमं·३१।२६·बु·५८।८।बृ·५।०शु५८।८
श·२।० मांदांकोत्तरविषेशनिकां७५सेभागले
णादे·अंकपावे·बु·शुक्रकोकर्के५पांचसेभागले

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ॐ
श्रि.
२६

सविषे

गतिकर्कादौधनं मकरादौ ऋणं चलांक खंडकाद्यं
न दियाजिस्मे जन्मदेव भौमादिगति होतिहै शुक्का
द्यामिति भाषा: अंत्यांगटि मं शुक्कोग्या तवा ख
डा आवता त्यंत्यांग होताहै जोशिघ्र केंद्रका पनाका
लियाहुवा ३ तिन अंकहै दोजगा एक अंको
का १५।०।० मे घटाय दोतो जेल्या जो अंक नाम
होव उस विषे मंगलको अन्तभक्ताप पांचसें भा
गलेव शुक्कको ५ से भागलेव अंशादिक पावे
शीघ्र केंद्र दवधे स्पष्टकविषे दका स्पष्ट होताहै
मंगल शुक्कका अत्यांक होताहै गति क्रम: कुज
बुध भृगुजानां चचलांका त्यगस्यति मं बु शु

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शीघ्रकेंद्रकाजोअंशांकहै १० गुणादेणा मंगल
को ७ से भागलेणा ३५।० मेंजोडदेणा बुदको ७ से
भागलेणा ८७।० मेंजोडदेणा शु ३ तिनसे भागले
५३।० मेंजोडदेणा ये मध्यमगतियामेनाघटसके
तो मध्यगति स्मैं स्काराविषे घटादेणा गति होति
है मांदा नांत्ता उर्ववत मृदुकेंद्र द ष कर्कदेवः स्फु
टगति स्यात् अधगतिहोतिहै मार्गग्रहांविषेता
त्काल ईष्टगति संस्कार उत कर्न वक्रग्रहोंको वि
षे उनकर्न इत्यस्य छो संस्कार संपूर्णम

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चक्रम्.

विषम. सम: द्विस्वभाव.
१।५।७।९।११ २।४।६।८।१०।१२ ३।६।९।१२

चर.
आदिकार्य्यहो स्थिर. द्विस्वभाव.
देरीसेंकार्य्यहो. विलंब.

धातु. जीव. मूलकाष्ठादि.

५	४	१।८	३।६	९।१२	२।७	प्रश्न. १०।११
सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
राजकार्य्य.	भूमिकार्य.	शुभकार्य.	तीर्थ.धर्मकार्य	रविला:	भय.हानि.	पशु हानि

सन्मुखदेषके प्रश्नकरतो. धातु.लाभ. आकाशदेषके.प्रश्नकरै. राजकार्य.देरीसे लाभहो. निचेकोंदेषके प्रश्नकरै. भूमि लाभ. पाधरनैं. विलंवरहै. शिरशमुखपर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

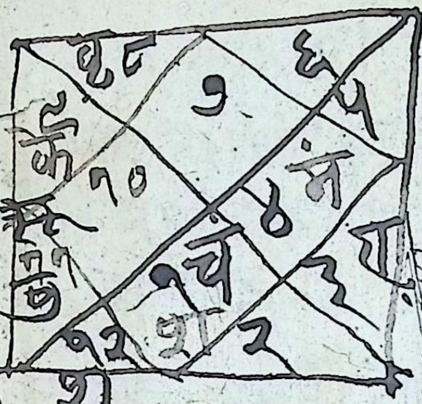

मंदाघ्रखंडा

	०	१	२	३	४	५	६	
मं		३५	५१	८५	१०८	१२४	१३०	मं
बु		१२	२१	२८	३३	३५	३६	बु
गु		१४	२१	३८	४८	५५	५७	गु
शु		६	११	१३	१४	१५	१५	शु
श	१५		४०	६०	७७	८५	९३	श

चलांकखंडा

	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
मं	०	५८	११७	१७४	२२८	२७२	३२५	३६१	३८३	४००	३६८	२४५
बु	०	४१	८१	११९	१५०	१७८	१९९	२१२	[illegible]	[illegible]	१५५	८९
गु	०	२५	४७	६८	८५	९८	१०६	१०८	१०२	८२	६६	३६
शु	०	६३	१२६	१८६	२४६	३०२	३५४	४०२	४४०	४६१	४४६	३२६
श	०	१५	२८	३९	४८	५४	५७	५७	५३	४५	३३	१८

अथ स्वर्गगामे तिथि मिलानेकी

गततिथि जोड देना १।२।३।४।५।६।७।८।
१०।११।१२।१३।चतु १४।१५।कृष्णपड
वा १६।१७।१८।१९।२०।२१।२२।२३।२४
२५।२६।२७।२८।२९।३० इतिक्रमः

चैत्र आदलेकर्के महीनोंको जोड चैत्र शुक्ल
पक्षसे वैशाख आमावास्यातक पूर्णजोड
इसिप्रकार कर्के सर्वसंख्य १ अन्यलोकेभव

मुद्दर शाका धवल लिवे अवशिष्ट तो प्रविष्ट
जोडे महीमे महीने जोडे लिवे तिशसे उपरला
डावे महीनोंको १२ वार से उपर चडा
राशमे ११ शुद्धा ३० अंश २८ शुद्धा घटि
पलामे ५८ शुद्धा ५८ शुद्धा ०१ इसिप्र

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ तात्कल

सू	चं	भौ	बु	बृ	शु	श	रा	के
२	८	२	१	२	१	३	१०	४
६	३१	१२	८	१२	५	२१	३	३
११	५	१२	५३	३३	४५	२०	५३	५३
१	५३	४५	१५	२८	३६	५४	५७	५७
६१	७३०	२४	२६	३	४५	७	३	३
१५	१०	१६	२४	५३	३२	१६	११	११
उदय	शी.	मर्ग	मा.	मा	मार्गी	मार्गी	व.	व.

नैसर्गमैत्रीचक्र

	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	रा
मि	चं मं बृ	सू बु	सू बृ चं	सू शु	सू चं मं	बु श	शु बु	मी च
स	बु	बृ शु शा मं	शु शा	शु शा	शा	मं	बृ	सम
श	शु श	००	बु	चं	बु	सू चं	सू चं मं	शा

८८

८४

७

८

क

ख

[illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अपमण्डलान्तर

बु	के	शु	स्थू	चं	भौ	ता	व	श
१ ८ ४ ६	० ८ २१ ६	२ ० ३७ ३४	० ७ १३ ४८	१ ० १३ ०	० ८ २१ ६	१ १० १९ ४८	१ ७ २४ ४८	१ ११ २८ ४२
४५ ७ २५ ६	४६ ४ १६ १२	४८ ५ १३ ४०	४५ ० ३७ ३६	५० १ १० ३६	५ १० १ ४२	५२ ८ १३ ३०	५४ ४ ८ १८	५६ ३ ३७ ०

कोणान्तर

को	शु	स्थू	चं	भौ	ता	बृ	श	बु
० ३ ७ ३४	० १० ७ २०	० ३ २ १२	० ५ ३ ४०	० ३ ७ ३४	० ९ ६ १८	० ८ ५ ५२	० ९ २१ ४३	० ८ २१ १४
५४ ७ [illegible] ३७	५७ ५ [illegible] ५१	५७ ८ २५ ३	५८ [illegible] २८ ४३	५८ ५ १६ १७	५९ २ २२ ३५	५९ १० २८ ३७	६० ८ २० १०	६१ ५ ११ २४

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संवत् १९१६ शाके १७८१ तत्र आषाढ कृष्ण पंचम्यां तिथौ घटि ४५
पला ५१ धनिष्ठा नक्षत्रे घटि ४४ पल १७ विष्कुंभ योगे घटि ४३
पला २९ मिथुनार्कगतांशा ८ सोमवासरे श्रीमन्मरौलीपर्गे
नेरलीग्रामे देवीदास शर्म्मणो प्रथम पुत्र जन्म इष्ट घटि १०

प्रथम महादशा वर्णादि

बक्षीरामारा घटि २२।१४

भुक्त	भोग्य	सर्वभोग
२२	४३	६५
१३	७	२०

भौ	रा	बृ	श	बु	के	शु	सू	चं
५	१३	११	१३	१२	५	१४	४	७
१	२	८	१०	५	१	७	४	३
१३	०	१३	२३	६	१३	१७	२०	२३
२७	८	३६	३९	५७	२७	०	६	३०
५	१८	२९	४३	५६	६१	७६	८०	८७
१	३	११	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१३	१३	३७	२१	२८	१७	२८	२८	१२
२३	४५	२९	०	५०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ध्रुवक

०
१२
२३
२

दाम साध्य

ठीकाकारी

शान्तर्दशा

श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	बृ
२	१	०	२	०	१	०	२	१
२	११	९	३	८	१	९	१	१०
१२	१८	२१	१८	१८	३७	२१	०	९
१८	५१	५४	०	१२	०	५४	३६	१२
३२	३४	३४	३७	३७	३८	३९	४२	४३
२	१	११	३	११	१	११	०	१०
९	२७	२६	१४	२८	२१	१३	१४	२१
३९	३३	[illegible]	[illegible]	[illegible]				

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ता. मे.

[illegible]

ग	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	रा	ल
गृ	६ श[illegible]	१० शत्रु	३ शत्रु	३ स्वगृह	३ उ[illegible] शा	२ स्वगृ.	४ शत्रु	११	३
हो	५ स्वगृ.	४ मित्र	५ सम	५ सम	५ सम	४ सम	५ श[illegible]	५	
द्रे	[illegible] शत्रु	८ उत्ती शत्रु	७ शत्रु	३ स्वगृह	७ उ[illegible] शा	२ स्वगृ	१२ मित्र	१२	
श	४ उती सम	१० शत्रु	५ सम	५ सम	५ सम	२ शत्रु	[illegible] उति मि.	११	
न	८ सम	६ स[illegible]	१० शत्रु	[illegible]	१ उ[illegible]	[illegible]	स्वगृ. १०	८	
द्वा	स्वगृ ५	सम २	[illegible] उतीत	[illegible]	[illegible]	[illegible] मित्र	उ[illegible] १२	१२	
त्रि	११ मित्र	३ उच्च शत्रु	८ सम	[illegible] ११	८ स्वगृ	६ सम	१० स्वगृ	१	

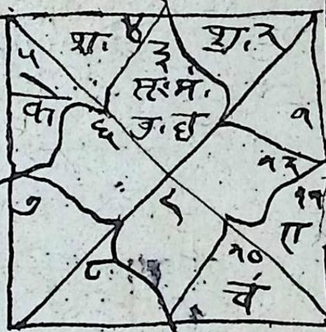

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

२०० ३६९ ७ ० ० १ ७ १

भावसे ऽल्प गर हो तो भावतनादिव्ययभावा।।
चय फल होता है

अथ योगिजातकतथा योगिनीदशा

		ल	स	ध	स	स	सं	मु	सं	म	सं	ही	सं
०	४	२	२	३	३	३	३	४	४	५	६	७	७
४०		१३	२२	०	९	१८	३१	६	३१	१८	९	०	२२
१२		९	०	५०	४०	३१	२१	११	२१	३१	४०	५०	०
		५०	७	२५	४३	१	१८	३७	१९	१	४३	२५	७
		८	८	९	९	९	९	१०	१०	११	०	१	१
		१३	२२	०	९	१८	३१	६	३१	१८	९	०	२२
		९	०	५०	४०	३१	२०	११	२१	३१	४०	५०	०
		५०	[illegible]	२५	४३	१	१८	३७	१९	१	४३	२५	७

पिं	धा	भ्र	भ	उ	सि	श्रा	म
[illegible]	५	७	१६	[illegible]	३१	३६	३४
११	११	११	११	११	११	११	११
३	३	३	३	३	३	३	३
२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४
३६	३४	[illegible]	[illegible]	५४	६१	[illegible]	[illegible]
११	११	११	११	११	११	११	११
३	३	३	३	३	३	३	३
२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

		म. फ.
३	६	१
४३	२७	५१
३२		५३
		स्प.

सू	च	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
२	८	१	[illegible]	१	१	३	१०	४
६	२	१	०	२	५	२	३	३
९	३	१३	५१	३	४४	२	५४	५४
५०	४२	५	२	४	३	४	०	०
६१	३०	२४	८६	३	४५	७	३	३
१५	१०	१६	२४	५३	३२	१६	११	११

अथ चंद्रमा के चैक्यी चल

९.	के. न.	चै	११
२६ गा	३	९	८
२२ ९५	३	२८	१६
४३ ३१	३७	३५	१६
	१	३५	

३४ ३८ ५१ भाज्य.

४४ ०६ भाज.

अथ मंगल के संस्कार स्प.

प्रा.	मृ.	मं.	शी.	स्प.
११	१	२	११	२
२२	१६	२४	५१	१२
३१	४१	२८	२७	१२
४६	५८	४८	३८	१७

मृ. ख. शि. ख.

अथ बुध के संस्कार स्पष्ट के मध्यम भा मे देशो स्प बु

प्रा.	मृ.	म.	शि.	स्प.
११	४	२	११	२
२२	२४	८	१८	८
२८	८	५५	२४	५१
४२	४२	३१	२२	२३

मृ. ख. शि. के. खं.

चक्रेनिघ्न धनर्णके

बृहस्पति संस्कार

प्रा.	मृ.	मं.	शी.	स्प.
११	३	२	११	२
२८	२२	१२	२३	१२
२४	३१	३५	१८	३३
८	१०	५	१२	३५

मृ. ख. शि. खं ४

शुक्र के संस्कार स्वरूप मे देशो स्प

प्रा.	मृ.	मं.	शि.	स्प.
९	९	२	८	९
२७	६	७	२६	५
५०	[illegible]	२७	२४	४४
६	११	०	२३	३१

मृ. ख. शी. खं.

२ ५६

शनि संस्कार

प्रा.	मृ.	मं.	शि.	स्प.
१०	४	३	१०	३
१७	१३	२६		२९
८	४२	३३	१७	२०
२२	२२	४२	३५	३६

मृ. ख. शि. खं

१७ ४८

सू	च	मं	रा	मं	बु	बृ	शु	श
७	३	८	८	७	३	२	[illegible]	९
२४	२३	२२	२९	१६	१३	९	११	२९
३५	५	३०	०	०	३०	०	०	०
३०	३०	०	०	०	०	०	०	०

अथ तात्कालिक स्पष्ट

सू	च	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
[illegible]	[illegible]							
२१	[illegible]							

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मतावन [illegible] गो. [illegible] वैल
२०० ३६७ ७०१७१
मं.फ.
०
२१

श्री संवत् १८१६ शक १७८१ चक्र ३० ह्रगण
३५ २० वार ० मिथुनार्कगते ८ इष्टं ११।१०
अथ मध्यमास्पष्टः॥ सू. के. न. वि. घ. गते

सू.	चं.	ऊ.	रा.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
[illegible]	८	८	१०	२	११	२	८	३
५	२२	७	३	१३	२२	७	३	१८
११	७	५१	५१	१२	३३	३	५०	४३
७	११	११	०	३	४	८	६	५
६१	३०	६	३	२४	८६	२	४५	७
१५	१०	२८	१०	१६	२४	५३	३२	१०

० १ १८ २५
१२ २० ३९ २
८ ३३ ७ ५१
३

अथ नाश २।२।१७
चर १४७ संस्कार २।२९। दिनार्द्ध १७।३९
दिनमान ३४।५४ रात्रिमान २५।६
रात्र्यर्ध १२।३३ मिश्र ४१।३९

गा ७ | मिकामे द्वि
७ | ३
३५ | २४
१२ | ४८

अथ भाव कालि स्पष्ट

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

बडुणाकाशु

जातां मलन
उहां लगांग

शकोवर्तमानअनुशाकाह्निनोगताच
विधेया भुवौ१ वागाचंद्रा१परिला
लापावकै ३१ताडित्तास्तेविधेया
णारघटिकापलयुक्तावसुपरिय
शाघंसमुशाकमिदंदिनपूर्वस्था
हायनवेला॥२॥

जाहां

जाहां द सें नक्षत्र बड़े सर्वभोग के बीते इसरे
दिन किवि घडीपलाजो दे सर्वभोग होता है उसरे दिन कि
तो धारि है उसे स्युकालगयदरिभोग्य
होता है भोगपको सर्वभोगमैस्यादे होता है

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हुम्महोदः ॥७६॥ समुद्रोऽथ कृपा
पारावारः सरित्पतिः ॥ गोकुलानंदका
रीच ५८० प्रतिज्ञापरिपालकः ॥ ७७ ॥
सहस्रानः स्रुपारामो महारामो धनुर्धरः ॥
पर्वतः पर्वताकारो गयो गेयो द्विजप्रियः
५९० ॥ ७८ ॥ कमलाश्वतरो रामो रामा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh